Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 04, (सितंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 30–31

किसान की आय बढ़ाने मे क्षेत्रिय ग्रामीण बैंक की भूमिका

विनीत कुमार जायसवाल
शोध छात्र
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्व विद्यालय,
ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

Email Id: – jaiswalwinit@gmail.com

परिचय

भारत मे बैंकिंग सुविधा का विस्तार 1969 मे 14 बैंक के राष्ट्रीयकरण से ही हो गया था परंतु इसका लाग समाज के केवल आमिर वर्ग ही ले पा रहे थे और ग्रामीण लोगों तक तो इसकी पहुच ना के ही बराबर थी। चूंकि तब भारत की 70 प्रतिशत से ज्यादा आबादी गावों मे ही निवास करती थी, ग्रामीण क्षेत्र मे बैंकिंग सुविधा के विस्तार के लिए भारत सरकार द्वारा ग्रामीण बैंक की स्थापना की गई।

क्षेत्रिय ग्रामीण बैंक भारत सरकार द्वारा स्थापित एक ऐसा बैंक है जो की ग्रामीण क्षेत्रों मे बैंकिंग की सुविधा प्रदान करता है और वहाँ की आर्थिक स्थिति सुधारने मे मदद करता है। पुराने समय मे किसान खेती के लिए लोन लेने प्रायः गावं के सेठ, साहूकार, और जमीदारों के पास जाया करते थे, ये लोग किसानों से मनमाने तरीके से ब्याज लेते थे। इस समस्या को दूर करने के लिए भारत सरकार ने 2 अक्टूबर 1975 को क्षेत्रिय ग्रामीण बैंक की स्थापना की ताकि कृषि क्षेत्र को सशक्त किया जा सके। इस बैंक की शाखा ग्रामीण क्षेत्र मे ही खोले जाते है ताकि कृषि एवं उससे जुड़े ज्यादा से ज्यादा लोग इस बैंक से जुड़ सके और जरूरत पड़ने पर आर्थिक सहायता का लाभ ले सके। ना केवल किसान वर्ग बल्कि यह बैंक ग्रामीण क्षेत्र मे अन्य कार्य करने वाले कारीगरों और ग्रामीण उधयमियों को भी ऋण एवं अन्य बैंकिंग सुविधा प्रदान करता है। इसकी संरचना की बात करे तो इसमे 50 प्रतिशत हिस्सेदारी भारत सरकार की है, 15 प्रतिशत राज्य सरकार और 35 प्रतिशत हिस्सेदारी प्रायोजक वाणिज्यिक बैंक की है। यह बैंक सरकारी योजनाओं को सुचारु रूप से लागू करने मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आयवश्यकता

देश की सबसे बड़ी आबादी अर्थात ग्रामीण आबादी (छोटे और सीमांत किसान, खेतिहर मजदूर, छोटे उद्यमी जैसे कुम्हार, बधाई इत्यादि) जो बैंकिंग सुविधाओ से काफी दूर थे, जिस कारण ग्रामीण क्षेत्र का आर्थिक विकास बहुत धीमी गति से बढ़ रहा था। सीमांत किसान, छोटे किसान और खेतिहर मजदूर अक्सर ऋण के लिए सेठ साहूकारों के पास जाते थे जिससे वह लोग एक ऋण चक्र मे फस जाते थे। इसी क साथ ग्रामीण लोगों के लिए बैंकिंग प्रक्रिया को पूरा करना एक कठिन कार्य था।

उद्देश्य

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना के उद्देश्य इस प्रकार है:

- ग्रामीण क्षेत्रों मे कृषि और सहायक गतिविधियों को वित्तीय सहायता प्रदान करना।

- लघु और सीमांत किसानों, भूमिहीन मजदूरों और ग्रामीण कारीगरों को कर्ज उपलब्ध कराना।
- ग्रामीण विकास को गति देना और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना।
- ग्रामीण क्षेत्रों मे बचत की प्रवृत्ति को बढ़ाना।
- ग्रामीण जनसंख्या को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली को जोड़ना।

कार्य

कृषि वित्त– यह बैंक किसानों को छोटी अवधि (फसल ऋण) , मध्यम अवधि और दीर्घ अवधि के लोन प्रदान करती है, जिससे किसान बीज, कीटनाशक, उर्वरक, कृषि यंत्र इत्यादि खरीद सकता है।

गैर–कृषि वित्त– इसमे बैंक पशुपालन, डेयरी, मत्स्य पालन के लिए ऋण प्रदान करती है। साथ ही गर ग्रामीण कुटीर उद्योग और स्वरोजगार के सृजन को बढ़ावा देने के लिए भी ऋण देता है। यह गाँव के आर्थिक विकास मे सशक्त बनाने मे मदद करता है।

बचत और जमा योजना – यह बैंक बचत खाता, चालू खाता, सावधि जमा, आवर्ती जमा जैसी सुविधायों के साथ साथ डिजिटल बैंकिंग जैसी सुविधा भी प्रदान करता है। ग्रामीण बैंक अन्य बैंकों की तुलना मे बचत खाते पर 0.5 प्रतिशत का अतिरिक्त ब्याज मिलता है।

कृषि उन्नति मे भूमिका

1. यह बैंक खाताधारकों को न्यूनतम ब्याज दर पर ऋण की सुविधा प्रदान करता है जिससे वे अपने कार्य के लिए आवश्यक उत्पादक सामग्री को खरीद सके।
2. यह बैंक ऋण की उत्पादकता बढ़ाने के लिए तकनीकी मार्गदर्शन भी देता है जिससे ऋण का सही उपयोग हो सके।
3. यह बैंक कृषि कार्य और सहायक कृषि कार्य के लिए किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा भी प्रदान करता है। इसका उपयोग करके किसान सही समय पर फसल की जरूरतों को पूरा करने के लिए तुरंत ऋण ले सकता है।
4. इस बैंक मे क्षेत्रिय भाषा मे संवाद की भी सुविधा दी जाती है ताकि किसान को बैंकिंग प्रक्रिया मे सुलभता मिल सके।

निष्कर्ष

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना का मुख्य लक्ष्य औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जुड़ना और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देना है। इन बैंकों ने छोटे और सीमांत किसानों, भूमिहीन मजदूरों, कारीगरों और ग्रामीण उद्यमियों को सस्ती और आसान ऋण प्रदान करके साहूकारों के दबाव से बचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्हें कृषि और गैर–कृषि क्षेत्रों में वित्तीय सहायता देकर ग्रामीण विकास में नई ऊर्जा दी गई है।

इन बैंकों ने न केवल लोगों को ऋण दिया है, बल्कि बचत की आदत को बढ़ावा देकर और तकनीकी मार्गदर्शन देकर लोगों को आत्मनिर्भर बनाने में भी मदद की है। ग्रामीण लोग अब तेजी से औपचारिक बैंकिंग से जुड़ रहे हैं क्योंकि डिजिटल बैंकिंग और सरल प्रक्रियाएं हैं।

संक्षेप में, ग्रामीण भारत में आर्थिक विकास में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इनसे कृषि क्षेत्र मजबूत हुआ है, रोजगार और उद्यमिता को बढ़ावा मिला है और ग्रामीण समाज में समग्र विकास का रास्ता प्रशस्त हुआ है। इनकी भूमिका आने वाले समय में और भी महत्वपूर्ण होगी क्योंकि ग्रामीण भारत को आर्थिक रूप से मजबूत और सशक्त बनाना ही आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार करेगा।